प्रश्न. : हड़प्पा संस्कृति में नगर सभ्यता के तत्वों का विश्लेषण कीजिये। उसके पतन के लिए उत्तरदायी कारक क्या थे?

हड़प्पा क्षेत्र में होने वाली कृषि अधिशेषों ने यहां नगर सभ्यता को जन्म दिया। हड़प्पा संस्कृति की विशेषता थी इसकी नगर योजना प्रणाली। नगर मुख्यत: दो भागों में विभक्त थे। उच्च नगर को किला नगर भी कहा गया है सामान्यत: यह ऊंचे टीले या चबूतरे पर स्थित है। यह क्षेत्र सामान्यत: दुर्गीकृत है और इसके लिए प्रवेशद्वार एवं वाच टावर का भी निर्माण हुआ था। निम्न नगर सामान्यत: छोटे मकानों वाला अधिवासीय क्षेत्र था। उच्च नगर की भांती यहां सार्वजनिक स्थल नहीं है। कई विद्वानों ने इसे इसे मजदूरों का निवास की संज्ञा दी है, हालांकि यह उचित प्रतीत नहीं होता। संभव है यहां श्रमिकों के साथ-साथ छोटे व्यापारी आदि रहते थे।

भवनों के निर्माण में पकी ईंटों का बहुतायत प्रयोग हुआ है। ईंटों की चुनाई अच्छी तरह हुई है। हड़प्पा के स्थापत्य काल में सीढ़ियों औरमकानों के कोनों पर L और T प्रकार की ईंटों का प्रयोग होता था। हड़प्पावासी दुनिया के पहले लोग थे जिन्होंने ईंटों का प्रयोग शुरू किया। बड़े-बड़े भवन हड़प्पा और मोहनजोदड़ो दोनों की विशेषता हैं। मोहनजोदड़ो में कई सार्वजनिक भवन स्थित थे, यथा- अन्नभंडार, पुरोहितवास, मंदिर, स्नानागार आदि।

हड़प्पा संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है- जल निकास प्रणाली। घर से निष्कासित जल के लिए कहीं-कहीं ईंटों के बने हुए छोटे शॉकपिट (गड्ढे) का भी निर्माण किया गया था। घरों से निकलने वाली नालियां, गली की मुख्य नाली से जुड़ी रहती थी और गली की मुख्य नाली शहर की मुख्य नाली से जुड़ी थी। गुजरात में स्थित लोथल का नक्शा बिल्कुल अलग-सा है। यह बस्ती आयताकार थी और चारों तरफ ईंटों की दीवारों का घेरा था। शहर के पूर्वी हिस्से में ईंटों से निर्मित कुंड सा पाया गया है, जिसे बंदरगाह के रूप में पहचाना गया है।

हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारकों का सूक्ष्म विश्लेषण कर विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हड़प्पा सभ्यता का पतन नहीं हुआ, बल्कि उनके जीवन में परिवर्तन हुआ। मार्टिमम व्हीलर पहला इतिहासकार था जिसने इस सभ्यता के पतन के कारणों पर प्रकाश डाला। ब्रिटिश इतिहासकारों का मत था कि जब-जब भारत पर विदेशी जाति का आक्रमण होता था तब-तब भारत का उत्थान होता था और अपने इस तर्क के आधार पर इन विद्वानों ने आर्य आक्रमण के सिद्धांत को प्रतिपादित किया और ऋग्वेद में वर्णित इंद्र जो कि आर्यों के सेनापति थे, को हड़प्पायी सभ्यता का विनाशक बताया। उनका मानना है कि इंद्र का नाम पुरंदर है, क्योंकि वह किलों को ध्वस्त करने वाला है। परंतु, पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर आर्य आक्रमण के सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि मोहनजोदड़ो से सिर्फ 9 नरकंकाल मिले हैं, जबकि अनुमानतः वहां 35000 लोग रहते थे। युद्ध में प्रयुक्त युद्धास्त्रों के भी प्रमाण नहीं

मिलता है और यदि युद्ध होता तो कुछ आयों के भी नर कंकाल अवश्य मिलते, पर सभी 9 कंकाल हड़प्पाई लोगों के ही हैं।

फेयर सर्विस ने पारिस्थितिक असंतुलन को इस सभ्यता के ह्रास का कारक माना है। उसके अनुसार नगर और ग्राम के लोग इस क्षेत्र की सघन वनस्पति पर आश्रित थे। इन वनस्पतियों के अत्यधिक प्रयोग के कारण इनका धीरे-धीरे ह्रास होने लगा। इसके कारण पारिस्थितिक असंतुलन पैदा हो गया। पर अनुसंधानों से यह पता चलता है कि वनस्पति संपदा के दोहन के बावजूद जमीन की उर्वरता नहीं गई। फेयर सर्विस का मत कुछ हद तक सही हो सकता है।

जॉन मार्शल जो इस सभ्यता के उत्खनन के सर्वेक्षक थे, ने कहा कि 2500 ई.पू. के उपरांत यहां की अर्थव्यवस्था में एक ठहराव सा आ गया। नगरीय जीवन में 2500 ई.पू. के बाद ज्यादा प्रगति नहीं देखी गयी। वे अपनी उपलब्धियों पर संतुष्ट हो गये। 2250 ई. पू. के पश्चात् तो ऐसा निश्चित तौर पर लगता है कि विघटन के लिए उत्तरदायी कारण जन्म लेने लगे थे। बड़े मकानों का बनना बंद हो गया। मनको के कारखाने बंद हो गये, लिपि का प्रयोग बंद हो गया, माप तौल का मानकीकरण बंद हो गया। नगर नियोजन में भी नियमों के उल्लंघन के प्रमाण मिलते हैं।

सारगौन/मेसोपोटामिया के पतन ने सिंधु सभ्यता के आर्थिक हितों को काफी नुकसान पहुंचाया। विदेशी व्यापार वह कारक था जिसने इस कृषि अधिशेष वाली सभ्यता को नगरीय जीवन के उच्चतम आदर्शों तक पहुंचाया था, पर जब वही सभ्यता समाप्त हो गयी तो शिल्पकार, व्यापारी आदि बेकार हो गये और पुनः कृषि की ओर वापस लौट गये। संभवतः हड़प्पा वासियों ने एक संपूर्ण विकसित प्रशासनिक पद्धति का निर्माण नहीं किया था। आर्थिक विखराव की स्थिति में यह प्रशासनिक व्यवस्था भी बिखर गयी।

इस प्रकार विद्वान-जन इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हड़प्पा सभ्यता के विघटन का कोई एक कारक नहीं था, कई कारकों ने मिलकर इस सभ्यता के नगरीय जीवन को ग्रामों की ओर पलायन करने पर मजबूर कर दिया। अंत केवल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और नगरीय जीवन का हुआ उनकी सभ्यता का नहीं, उनके कुछ तत्व आज भी हमारे जीवन में मौजूद हैं।

प्रश्न : सौर ऊर्जा की प्रकृति का परीक्षण कीजिये। उसकी